Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

प्राचीन भारत में धर्म

डॉ. मधु वालिया*

* प्राचार्य, अमरनाथ भगत जयराम कन्या महाविद्यालय, सेरधा, जिला कैथल (हरियाणा) भारत

शोध सारांश –भारतीयों का जीवन प्राचीन काल से धर्मगत उत्कंठा से अनुप्राणित रहा है। जिसमें नैतिक मूल्यों, आधारगत अभिव्यक्तियों तथा जग निनयंता के प्रतिसमर्पण भावना का सन्निवेश था, जिसके माध्यम से व्यक्ति लौकिक उत्कर्ष के साथ–साथ अध्यात्मिक उत्कर्ष करता था। सम्पूर्ण समाज का वर्ण के आधार पर समुचित और सुनिश्चित विभाजन नैतिक मूल्यों और धर्म से प्रभावित होकर किया गया था। विभिन्न वर्गो के कर्मो का निरुपण भी सदाचार और धर्म से प्रेरित तथा अनुप्राणित था। अत एवं इसे वर्ण धर्म की संज्ञा दी गई थी। धर्म का व्यावहारिक महत्व कर्तव्य का समुचित पालन था इसी प्रकार आश्रम व्यवस्था की भी नियोजिना की गई जिसके अर्न्तगत मनुष्य के सर्म्पूण जीवन का चार भागों में विमक्त कर उसके आश्रमगत कर्तव्यों एवं दायित्वों का आंकलन किया गया था। छान्दोग्य उपनिषद्ध में धर्म के तीन सकंधों की चर्चा है। जहां निवास करने वाला ब्रहाचारी ब्रहा का ज्ञान प्राप्त करने में अपने को क्षीण कर देता है। इनका अनुगमन करने वाले सभी पूण्य लोक को प्राप्त करते है।

प्रस्तावना – हडप्पा सभ्यता को वैदिक से भिन्न सिद्ध करने के लिए जो तर्क दिये जाते है वो धर्म और विश्वास पर आधरित रहा है। इस काल से ही हिन्दू धर्म को प्राचीन धर्म माना जाता है। जिसकी उत्पति प्रागैतिहासिक काल से मानी जाती है। भारतीय उपमहाद्धीप मे प्रागैतिहासिक धर्म की मौजूगी के साक्ष्यों को बिखरी हुई मीजोलथिक रॉक पेंटिग्स (पत्थर पर बनाये गये चित्र) पर देखा जा सकता है। जिनमें कई प्रकार नृत्यों तथा रस्मों को दर्शाया गया है। सिन्धु नदी में घाटी में बसने वाले नीयोलिथिक पुरोहितगण अपने मृतजनों को धार्मिक रीति रिवाजों के अनुसार दफनाने थे जिससे यहां जादुई आस्थाओं में उनके विश्वास के बारे मं पता चलता है। इस समय में उनके विश्वास के बारे में पता चलता है। इस समय मे वैदिक समाज पितृ प्रधान था और उसके देवता मुख्यत: पुरुष थें। जबकि हडप्पा सभ्यता मातृ प्रधान थी इसमें मात्र देवियों का प्राधन्य था। हडप्पा सभ्यता का एक प्रधान देवता रुद्र था। जबकि वैदिक परम्परा में इसकों भय और उपेक्षा का भाव दिखाई देता है।

धर्म के उद्देश्य– धर्म का उद्देश्य सभी धर्मो में एक जैसा होता है। धर्म से जुडे कुछ मुख्य उद्देश्य ये है।

1. सभी का सम्मान और सत्कार करना।
2. अन्तर जातीय भेदभाव को खत्म करना।
3. धर्म का मकसद मनुष्य को अपनी सत्य प्रकृति की पहचान कराकर मोक्ष प्राप्त करना था।
4. धर्म ब्रहांडीय कानून था, जो अराजकता से ब्राहाण्ड का निर्माण करता था।
5. धर्म कर्तत्य, अधिकार चरित्र और व्यवसाय से जुडा था।
6. धर्म प्रकृति की स्तुति और प्रार्थना के मन्त्रों से जुडा था।

प्राचीन भारत में धर्म – वेदों में सृष्टि प्रकृति और सर्जगकर्ता से सम्बन्धित विषयों का विवेचन है। सृष्टि विधा और विश्व दर्शन इसमें समाहित है। जगत के सृष्टा के रुप मे दिव्य शक्ति को स्वीकार किया गया है तथा उसे सृष्टि का नियंता माना गया। इस प्रकार सृष्टा, सृष्टि प्रकृति और मानव एक ही अनुशासन से निष्पन्न होकर तथा एक ही अनुशासन से ग्रथित होकर समबिन्धत है।

देवमंडल – ऋग्वेद में देवताओं को आत स्लिवांस (स्थिर रहने वाले) अनतास: (अनंत), विश्वतरचरि (संसार से उपर रहने वाले) कहा गया है। वैदिक चिंतन में मानव की श्रेष्ठता और महता स्वीकार की गई। उसे विश्वात्मा से अत्याधिक समीप माना गया है। वैदिक धर्म में सूर्य, वरुण, सविता, विष्णु, मित्र, अश्विन और उषा प्रधान देवता है। इन्द्र, अपानपात, पर्जन्य और रुद्र मुख्य है। ये अतरिक्ष देवता माने गये है। स्थानीय देवताओं में पृथ्वी,अग्नि , बृहस्पति और सोम विख्यात है। वैदिक साहित्य से विदित होता है कि आर्यो ने देवताओं को मानवीय आधार पर वकल्पित किया है। इस काल में सत की अभिवयना की गई जीवन दर्शन, बौद्धि प्रधानता, स्तूति, यज्ञ आदि की प्रधानता की।

औपनिषदिक धर्म और ज्ञान – उपनिषद्क साहित्य का विकास वेदों के मंथन करके किया गया है। इसमें ईशावास्य केन कंठ, प्रश्न , मुंडक, मांडक्य, तैतरीय, ऐतरेय, छान्दोगय, वृहदारण्यक आदि उपनिषद्ध अधिक प्रसिद्ध है। उपनिष्दों में बह्मं और जीव के पारस्परिक संबन्ध और उनकी समीपता पर तर्क किया गया है। अंनत होने के कारण परमात्मा या ब्रह्मं अमृत है तथा सीमाबद्ध होने के कारण जीवात्मा या मनुष्य जन्म–मरण के बंधन में जकडा हुआ मृत है। जन्म–जश–मरण के इस बंधन से मुक्ति तभी संभव मानी गई है। जब मनुष्य सीमा को तोडकर, संकुचन को समाप्त कर तथा स्वार्थ को ध्यान कर आगे बढता है। कंठ और ईश उपनिषदों में कहा गया है कि मनुष्य के अंतस की स्वार्थी प्रवृतियां जब समाप्त हो जाती है, तब वह अमृत बनकर ब्रह्मं पद को प्राप्त होती है। जो मनुष्य ब्रह्त को जान लेता है वह स्वंय ब्रह्म हो जाता है। मनुष्य इसी संसार में और इसी जीवन में मुक्ति प्राप्त करता है। उपनिषद युग में ओंकार की उपासना का विशेष स्थान था। आत्मा की प्रत्यक्ष अनुभूति करने वाला जीव अपनी आत्मा से प्रेम करता था। उपनिषदों में

आह्वंद का वर्णन सांसारिक आधार पर लौकिक संस्कार के प्रिया–प्रियतम के सम्मिलन से किया , केवल शिव ही रहा जाता है। अकति शिव केवलोदहम की उपलब्धि होती थी।

ब्राह्मण धर्म या हिन्दू धर्म – ब्राह्मण धर्म अथवा हिन्दू धर्म का उद्भम स्थान वैदिक धर्म है। हिन्दू धर्म की समस्त व्यवस्थाओं में ब्राह्मणों का आधिपत्य और निर्देशन रहा है। इसलिए इसे ब्राह्मण धर्म के नाम से भी जाना गया। ब्राह्मण धर्म का मुख्य आधार वर्ण व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था थी जो वर्ण धर्म और आश्रम धर्म के नाम से समाज में स्थित हुई। ज्ञान और सत्य की प्राप्ति के निमित भ्रमण करने वाले तपस्वी और साधु अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न सम्प्रदायों में संगठित होते है। इस धर्म में एक देवता की दूसरे देवता से श्रेष्ठता और प्रधानता भी यज्ञ से ही सिद्ध होती थी। इस युग में पुरोहित उत्कृष्ट अभिलाषा रखता था। ब्राह्मण धर्म में गीता हिन्दू धर्म का प्रधान स्तम्भ है। गीता में जीवन और मृत्यु की चर्चा करते हुए कहा गया है कि मृत्यु को अद्धितीय वस्तु नही है, कोई मरता नही है। आत्मा अजर, अमर, सत्य, नित्य, अचिंत्य और व्यापक है। हिन्दू धर्म में ज्ञान की अभित्यक्ति के अर्न्तगत अवतार बाद का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका प्रधान प्रयोजन धर्म स्थापन और अर्धम विनाशन था तथा वैदिक काल से ही अवतारवाद का प्रारम्भ हुआ था।

वैष्णव धर्म –भगवान विष्णु को अपना पावन प्रधान इष्टदेव और परमात्मा के रुप में मानने वाले वैष्णव भक्त कहलाये। वैष्णव धर्म में विष्णु के दस अवतार बतायें गये है। इन अवतारों में कृष्ण का नाम नही है। क्योंकि स्वयं भगवान विष्णु ही कृष्ण के साक्षात स्वरुप थे। महाभारत में वासुदेव का नाम अनेक बार आया है। वासुदेव पूजन मोर्य युग में भी प्रचलित था। ऐसा प्रतीत होता है कि भागवत धर्म का उदय मोर्य युग के पहले हो चुका था। महाभारत के समय भागवत धर्म एक प्रमुख धर्म बन गया था। पॉचारत मत का विकास तीसरी सदी ई0पू0 के लगभग हुआ था, जो वैष्णव धर्म का प्रधान मत था। कांलातर में रामानन्द सम्प्रदाय का विकास हुआ जिसमें कबीर, रैदास, मूलकदास, दादू आदि प्रमुख अनुयायी हुए।

शैव धर्म – शिव से सम्बन्धित धर्म को शैव धम कहा गया। पाषाण युग भी अनेक जातियों में भूमि की उर्वरता के लिए लिंग की पूजा की जाती । सूत्र ग्रन्थों में भी रुद्र की अपनी विशिष्टता है तथा उनके विवरण से यह प्रमाणित होता है कि उनका अनार्य तत्वों पर प्रभाव था। उनको प्रसन्न करने के लिए पशुबलि की व्यवस्था की गई थी। पुराणों के अनुसार शिव को त्रंयबक, भव, शर्व, महादेव, इशान , शूलपाणि, शंकर, नीलग्रीव, वृषध्वज, पशुपति आदि विभिन्न नामों से अभिहित किया गया है। इस सम्प्रदाय का गुप्त काल में काफी विकास हुआ। कायाल्कि सम्प्रदाय के ईष्ट देव भैरव है जो शंकर के अवतार माने जाते है। दक्षिण भारत में शैव सम्प्रदाय का प्रचार प्रसार हुआ है। पूर्व मध्य युग में शैव धर्म नए और नए आयाम में विकसित हो रहा था। जिसे कालांतर में नाथ सम्प्रदाय या हठ योग और सहजयान सिद्धि कहा गया। संयम और सदाचार को उन्होने प्रधान आधार माना, साथ ही सहज जीवन पद्धति को अपनाने के लिए निर्देश दिया।

शाक्य सम्प्रदाय – हिन्दू धर्म में शक्ति (देवी) की पूजा अत्यत प्राचीन काल से प्रचलित है। शक्ति को नारी के रुप में अभिवयक्त किया गया है। सृष्टि की प्रक्रिया में नारी का योगदान स्पष्टत: अभूतपूर्व है। शक्ति देवी का रुप प्रागैतिहासिक काल से निखरने लगा था। ऋग्वेद के दश्म मंडल में ऐ पूरा सूक्त ही शक्ति की उपासना में विवृत है जिसें तांत्रिक (देवी सूत) कहते है। मार्कडेय पुराण में शक्ति की व्यापकता और महता विहत है। शक्ति पूजा का ज्ञान तक शैव सिद्धान्त से प्रभावित है। किन्तु शक्ति की दार्शनिकता सता और व्यवहारिक सत्ता स्वंतन्त्र और उन्मूक्त सत्ता है। जो उन्हे सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है। दार्शनिक सत्ता में शिव और शक्ति आद्य तत्व है जो देश काल और तर्क से परे है।

धर्म की आलोचना – हडप्पा संस्कृति के किसी भी स्थल से किसी मन्दिर था प्रमाण में देखकर और इसे अवैदिक सीमा में ही कहीं न कहीं खपाने के लिए चिन्तित कुछ नए अध्येताओं ने यह सुझाया कि उनका कोई धर्म नही था। यह समस्या उनके विचारणीय है। जो वैदिक उपासना पद्धति से हडप्पा का अलगाव दिखाने के लिए ही जलशुद्धि आदि के सुझाव देते है। पर यह भूल जाते है कि पूरे भारतीय समाज में जलशुद्धि की यह परम्परा वैदिक जनों तक क्यों पाई जाती है। हिन्दू धर्म की आलोचना में हिन्दू और गैर हिन्दू विचारकों के द्धारा की गई। हिन्दू सुधारकों ने भी भेद–भाव व कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई तथा कई हिन्दू समाज सुधारक आन्दोलन भी चलाए गए। आलोचना के रुप में धर्म आधुनिकता धर्म और परिर्वतन के लिए नए सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों के लिए जगह देता है। दूसरों की आलोचना के लिए शक्तिशाली प्रणालियां और तरीके अतंनिर्हित है। वास्तव में आलोचना इसके मूल सिद्धान्तों और प्रथाओं का अभिन्न अंग है। परन्तु यह समस्या उनके लिए विचारणीय है। जो वैदिक उपासना पद्धति से हडप्पा का अलगाव दिखाने के लिए ही जलशुद्धि के सुझाव देते है। पर यह भूल जाते है कि पूरे भारतीय समाज में जलशुद्धि की यह परम्परा वैदिक जनों में ही आराम्भ से आज तक क्यों पाई जाती है।

निष्कर्ष–यह कहा जा सकता है कि वैदिक धर्म का प्रसार भारत में भक्ति और ज्ञान के मार्ग को प्रशस्त करने के उद्देश्य से ही हुआ था। पूर्ववर्ती काल में वासुदेव कृष्ण के पूजन का अधिक विस्तार हुआ किंतू मध्ययुग में कृष्णोपासक और रामोपासक दोनो सम्प्रदायों का समांनातर गति से प्रसार हुआ। पंजाब में सिक्ख धर्म का प्रवर्तन कर आशा और विश्वास का नया दीप जलाया। परवर्ती उपासकों एंव चिन्तकों ने जनभाषा को अभिव्यक्ति का प्रधान आधार मानकर अपने विचारों को जन–जन तक पहुंचाया। इस काल में संयम और सदाचार को उन्होने प्रधान आधार माना तथा सहज जीवन पद्धति को अपनाने के लिए निर्देश दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Keith, A.B. Religion and Philosophy of the Veda and Upanishads 2Vols (1970)
2. Jaiwal, Suvira: The origin and development of Vaishnavism (1981)
3. Majumdar, R.C.A New History of the Indian People (1940) : The History and culture of the Indian People Vol.III. The classical Age (1970)
4. A Pte, V.M. Vedic Rituals, CHI, I, (1958)

****